(3) विद्यालय पत्रिका :-

यह मुद्रित तथा हस्तलिखित दोनों रूपों में हो सकती है, इसके माध्यम से विद्यार्थी लिखित रूप से अभिव्यक्त कर सकते हैं इन पत्रिकाओं में लेख, कहानियाँ, कविताएं, बालगीत, वार्तालाप, एकांकी नाटक, चुटकुले आदि आमंत्रित किये जा सकते हैं, स्तर में चाहे कुछ न्यूनता हो जाए, परंतु मौलिकता की ओर विशेष ध्यान दिया जाए।

यदि कक्षा के विद्यार्थी अधिक उत्साह दिखाएं तो उनके लिए अलग से कक्षा पत्रिका की व्यवस्था की जा सकती है।

विद्यालय - पत्रिका या कक्षा - पत्रिका के निम्नलिखित लाभ हो सकते हैं :-

(1) उनकी लेखन शक्ति का विकास होगा।

(2) उनकी प्रतिभा को पनपने का समुचित अवसर मिलेगा, आगे चलकर इनमें से कुछ विद्यार्थियों को अच्छा साहित्यकार बनने का अवसर मिलता है।

(3) निरन्तर लिखते रहने पर उनकी अपनी लेखनी शैली विकसित होती है

(4) भिन्न - 2 विषयों पर लिखते समय वे अनेक स्थानों से नवीन ज्ञान उपलब्ध करते हैं।

(4) भाषा परिषद् या साहित्य परिषद्

विद्यालय में भाषा परिषद् या साहित्य परिषद् भी आयोजित की जा सकती है इस परिषद् द्वारा भिन्न-२ कार्यक्रम संगठित किये जा सकते हैं, यथा :—

(1) कवि गोष्ठी या कवि सम्मेलन
(२) अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता
(3) लेख प्रतियोगिता
(4) कहानी प्रतियोगिता
(5) काव्य पाठ
(6) गद्य का शुद्ध पाठ

इन कार्यक्रमों द्वारा विद्यार्थियों जहाँ साहित्य में रुचि लेंगे, वहीं साहित्य सृजन की ओर अभिप्रेरित भी होंगे।

(5) संग्रहालय :—

भाषाई कौशलों के विकास में संग्रहालयों की व्यवस्था भी की जा सकती है। और समय सारणी में स्थान देकर, विभिन्न प्रकार की पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं तथा भाषा शिक्षण संबंधी उपकरण संग्रहित कर भाषाई स्तर पर समृद्ध किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(6) नाटकीय क्रियाएँ :—

विद्यालय स्तर पर नाटक जहाँ विद्यार्थियों को भूमिका निर्वाहन का अवसर देते है वहीं दूसरी ओर भाषा को जानने और अभिव्यक्ति के अवसर भी प्रदान करते है। नाटकीय क्रियाओं में बड़े नाटक, लघु नाटक तथा झाँकी नाटक आ जाते है। भाषा की दृष्टि से इनके निम्नलिखित लाभ हो सकते है। —

(1) नाट्य साहित्य में रुचि जागृत होना।
(2) नाटकों में कथोपकथन तथा हाव-भाव को अपनाकर अपनी बातचीत शैली को और ~~लिख~~ परिपक्व बना सकते है।
(3) नाटक में दृश्य - श्रव्य विधान द्वारा अन्य साधनों की अपेक्षा जल्दी सीखते है।
(4) समाज की शिष्टाचार के ज्ञान में सहायक

इस प्रकार पाठ्यसहगामी क्रियाओं द्वारा भाषाई कौशल के विकास में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है अध्यापक की भूमिका, ऐसे में अध्यापक को एक अच्छा योजनाकार, कार्यव्यापारण, निर्देशक, मूल्यांकनकर्ता, प्रबंधन, निर्णय निर्माता, सलाहकार, प्रेरक के रूप में कार्य करना चाहिए, ताकि विद्यार्थीगण पाठ्यसहगामी गतिविधियों से अधिक - से - अधिक लाभान्वित हो सके।

Page No.
Date :

सहगामी क्रियाओं का संगठन

पाठ्यसहगामी क्रियाओं के संगठन में निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखना अति आवश्यक है:—

(1) किसी अनुभवी अध्यापक की देखरेख में सहगामी क्रियाओं को संगठित किया जाए।

(2) प्रत्येक क्रिया का पूरा - पूरा हिसाब रखा जाए।

(3) पाठशाला में ऐसा वातावरण बनाया जाए कि विद्यार्थी इन क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित होते रहें।

(4) अपनी क्षमता के अनुसार, प्रत्येक विद्यार्थी किसी-न-किसी क्रिया में भाग ले।

(5) विद्यार्थी उन सहगामी क्रियाओं का चयन करें -
(क) जिनमें उनकी रुचि हो।
(ख) जिनका भाषा संबंधी महत्व हो।

(6) कोई विद्यार्थी कितनी सहगामी क्रियाओं में भाग ले सकते हैं, इसकी परिसीमा निर्धारित कर दी जाए ताकि पाठ्यक्रम और सहगामी क्रियाओं में समन्वय स्थापित किया जा सके।

(7) सरस्वती यात्राओं को छोड़कर, शेष सहगामी क्रियाएं यथासम्भव विद्यालय के भवन तथा प्रांगण में ही

Scanned with CamScanner

आयोजित की जाएँ।

(9) पाठशाला की समय - सारणी में सहगामी क्रियाओं को स्थान दिया जाए।

(10) सहगामी क्रियाओं की स्वतंत्रता पाठशाला के विद्यार्थियों तक ही सीमित रखी जाए।